शोध-चिंतन पत्रिका: सहयोगी विद्वानों द्वारा पुनरीक्षित ई शोध पत्रिका
अंक:3; जुलाई-दिसंबर, 2021; पृष्ठ संख्या: 68-77

'मरूद्यान' उपन्यास का संवेदना पक्ष : एक समीक्षात्मक अध्ययन

✍ संजीव मंडल

शोध-सार:

मरूद्यान डॉ. भूपेंद्रनारायण भट्टाचार्य द्वारा रचित चेतना प्रवाह शैली में लिखा गया एक विचारोत्तेजक असमीया उपन्यास है। इसमें उपन्यासकार ने नायक शीलादित्य के माध्यम से कदाचित अपने ही विचारों को पेश किया है जिसे एक आधुनिक युगीन मानस की उपज कह सकते हैं। पत्नी के स्वतंत्र अस्तित्व को मान्यता देने की चरम सीमा यह है कि वह पत्नी के उसके साथ बेवफाई करने को भी न्यायोचित मानता है क्योंकि पत्नी को अपने जीवन के सभी फैसले स्वतंत्र रूप से लेने का हक है। शीलादित्य की नौकरी जा चुकी है और वह अब केवल चित्रकारी करने के अलावा कुछ नहीं करता। उसका बच्चा मर चुका है और पत्नी दूसरे पुरुष के साथ जा चुकी है। इस उपन्यास में घरेलू हिंसा, व्यापारियों की मुनाफाखोरी, मूल्यवृद्धि, घूसखोरी, स्वार्थपूर्ण राजनीति आदि सामाजिक, आर्थिक और राजनीतिक समस्याओं का भी चित्रण किया गया है। इस उपन्यास में लेखक का कलाकार सुलभ मन मुखर हुआ है। यह उपन्यास हमें जीने की प्रेरणा भी देता है। इस उपन्यास के नायक का चरित्र हमें पहले-पहल चौंका भी सकता है। पर एक कलाकार के लिए ऐसी मानसिकता कोई अनोखी बात नहीं है। इस उपन्यास की पृष्ठभूमि कोलकाता शहर है।

बीज शब्द: *असमीया साहित्य, उपन्यास।*

प्रस्तावना:

असमीया साहित्यकार डॉ. भूपेंद्रनारायण भट्टाचार्य ने 'मरूद्यान' उपन्यास की रचना की है। इनका जन्म 5 अगस्त 1952 ई. में हुआ था। गौहाटी विश्वविद्यालय से इन्होंने वनस्पति विज्ञान में पीएच.डी. की है। गुवाहाटी के आर्य विद्यापीठ कॉलेज के वनस्पति विज्ञान विभाग के वे विभागाध्यक्ष रह चुके हैं। भट्टाचार्य एक विशिष्ट चित्रकार हैं। अपनी कहानियों में उन्होंने चित्रकला और मनोविज्ञान का सफल प्रयोग किया है। 'काउरी, काउरी आरु काउरी' (कौवा, कौवा और कौवा) कहानी के लिए अखिल भारतीय स्तर की कहानी के लिए

दिया जाने वाला श्रेष्ठ पुरस्कार 'कथा पुरस्कार' असमीया भाषा के लिए इन्हीं को पहली बार 1991 ई. में दिया गया था। 'असम साहित्य सभा' ने 1980 ई. में इन्हें सर्वश्रेष्ठ उपन्यासकार पुरस्कार प्रदान किया। दलाल (1983), कोरस (1985), घोंरापाक (1992), गरम बताह (गरम हवा) (1997), आठाइसटा चुटि गल्प (अट्ठाइस छोटी कहानियाँ) (2006), ब्रह्मपुत्रर बुकुत सूर्यास्त (ब्रह्मपुत्र के सीने में सूर्यास्त) (2003), कॉफी हाउसत केइघण्टामान (कॉफी हाउस में कुछ घण्टे) (2008), पानबजारत एटा बाघ (पानबजार में एक बाघ) (2007), जीवनर गद्य कबिता (जीवन की गद्य कविता) (2007), गुवाहाटीया गल्प गुच्छ (गुवाहाटी का गल्प गुच्छ) (2015) - ये उनके कहानी-संकलन हैं। दुर्जन (1980), घरुवा परिबेशत नासिरुद्दीन शाह (घरेलू परिवेश में नासिरुद्दिन शाह) (1987), नरककुण्डत केइजनमान अतिथि (नरककुण्ड में कुछ अतिथि) (1987), मरूद्यान (1991), सागर तीरत आमि (सागर किनारे हम) (1994), प्रेम, छबि आरु कबिता (प्रेम, चित्र और कविता) (1995), अनुभव (2000), बालिघर (बालूघर) (2003), कांता (2007), मन (2007), मरीचिका, मरीचिका और मरीचिका (मरीचिका, मरीचिका और मरीचिका), बुढ़ादियार पारे पारे (बुढ़ादिया के किनारे-किनारे) - ये उनके उपन्यास हैं। इनका 'अनुभव' नामक उपन्यास हिंदी में अनूदित हुआ है। इनकी बहुत-सी कहानियाँ अंग्रेजी, तेलगू, मलयालम, बंगाली और हिंदी में अनूदित हुई हैं।

'मरूद्यान' उपन्यास में कलकत्ते को पृष्ठभूमि के रूप में चुना गया है। कथा का काल है 1989 ई.। शीलादित्य नामक एक कवि-चित्रकार के निस्संग जीवन को इसमें चित्रित किया गया है। शीलादित्य इस निस्संगता से परेशान नहीं है, बल्कि इस निस्संगता से वह जीवन में कुछ करने की प्रेरणा पाता है। उपन्यास चेतना प्रवाह शैली में लिखा गया है।

इस शोधालेख में हमने ग्रंथ-सूची और उद्धरण MLA (Modern Language Association) पद्धति के नवीनतम संस्करण के नियमों के अनुसार रखे हैं।

विश्लेषण :

आगे हमने इस उपन्यास का अलग-अलग दृष्टिकोणों से विश्लेषण करने का प्रयास किया है।

उपन्यास की कथावस्तु :

एलवर्ट हॉल के कैफ़े में बैठा हुआ शीलादित्य अपने अतीत की घटना का स्मरण करता है। स्मरण करता है मेखला नामक लड़की के साथ प्रेम का। उसकी पत्नी थी प्रणामिका। उनका प्रेम विवाह हुआ था। वह प्रणामिका के साथ के प्रेम का स्मरण भी करता है। वह अब भूलक्कड़ हो गया है। कहीं की चीज कहीं रख कर भूल जाता है। फिर उस चीज को खोजते हुए परेशान होता है। ये सारी बातें भी वह कैफ़े में बैठे-बैठे ही सोचता जाता है। कैफ़े में शीलादित्य सिद्धार्थ बसु के इंतजार में बैठा है। वह अपना नया कविता-संकलन उसे पढ़ाना चाहता है। बसु उसका सबसे प्रिय व्यक्ति है जो खुद भी एक कवि है और लोगों की दृष्टि में शीलादित्य से बेहतर कवि।

शीलादित्य एक कम्पनी में एरिया मैनेजर था। कम्पनी दिवालिया हो गई और बंद हो गई। शीलादित्य की नौकरी भी चली गई। उसकी नौकरी चले जाने के बाद वह कविता लिखकर, चित्रकारी करके दिन गुजारने लगा। अचानक से निकम्मे हो गए पति के साथ प्रणामिका रहना नहीं चाहती थी। किरायेदार हेमंत अक्सर शीलादित्य के निकम्मेपन पर व्यंग कसता है । हेमंत की इस आदत के बारे में जब शीलादित्य आलोचना करता तो प्रणामिका उलटे उसकी आलोचना करने लगती और हेमंत का गुणगान करती। हेमंत कितने अच्छे-से कपड़े पहनता है, हेमंत कैसे बिना आवाज किये गाड़ी स्टार्ट करता है, हेमंत कितने अच्छे-से गाड़ी चलाता है आदि-आदि। शीलादित्य ने जब पत्नी के पास नई साड़ी, परफ्यूम, सेंडल आदि देखे तो पहले तो उसने सोचा कि मैं दे नहीं पाता इसलिए पत्नी बचत के रुपयों से लाई होगी। पर बाद में हेमंत के बार-बार सीटी बजाने, प्रणामिका के कहीं सजधज कर निकलते वक्त शीलादित्य के अचानक घर पहुँच जाने पर उदासी से काले पड़ गए प्रणामिका के मुख को देखकर उसे पत्नी पर संदेह हो जाता है। फिर एक दिन शीलादित्य पत्नी को हेमंत के साथ संभोग

करते हुए पकड़ लेता है। पर उसे हेमंत और प्रणामिका के चेहरे पर डर और संकोच का कोई भाव नहीं दीखता। हेमंत शीलादित्य से कहता है-

> खुवाब नोवारा यदि संसार करिछिलि किय? बेहुदा, थुइ। पागलर लगत जानो मानुह बास करिब पारे?
>
> (भट्टाचार्य 2011:31)

(भावार्थ: खिला नहीं सकते तो संसार क्यों बसाया था। बेहूदा,थू। पागल के साथ भला कोई रह सकता है।)

उस दिन के बाद प्रणामिका शीलादित्य के साथ एक पल भी रहना गवारा नहीं करती। यहाँ तक कि वह शीलादित्य के घर में घुसने तक से इनकार कर देती है। शीलादित्य के लिए व्यक्ति की स्वतंत्रता बहुत मायने रखती है। इसी कारण प्रणामिका के किसी के भी साथ चले जाने को वह प्रणामिका की स्वतंत्रता के अंतर्गत मानता है। इस कारण वह खुद प्रणामिका का सारा सामान लाकर देता है और प्रणामिका एक सप्ताह तक हेमंत के साथ उसी किराये के मकान में रहने के बाद कलकत्ते की ही किसी दूसरी जगह चली जाती है।

शीलादित्य को जब उसका पूर्व बॉस इस घटना के बाद संवेदना प्रकट करने के लिए बुलाता है, तब शीलादित्य खुद ही कहता है-

> यिहेतु कारो स्वाधीनतात हस्तक्षेप करात मोर अधिकार नाइ, सेइ कारणेइ बास्तवक आनन्देरे स्वीकार करि लैछो। यि करिछो बा घटिछे दुयोटार स्वइच्छातेइ हैछे।
>
> (भट्टाचार्य 2011:33)

(भावार्थ: चूँकि किसी की स्वाधीनता में हस्तक्षेप करने का मुझे अधिकार नहीं है, इसीलिए वास्तविकता को खुशी-खुशी स्वीकार कर लिया है । जो किया या जो घटा है दोनों की इच्छा से ही घटा है ।)

शीलादित्य और प्रणामिका को एक बेटा भी हुआ था। पर उसकी मृत्यु हो गई थी। उसकी मृत्यु के एक सप्ताह बाद ही हेमंत और प्रणामिका के बीच रिश्ता आकार लेने लगा था। प्रणामिका को बेटे की मृत्यु के बाद दु:ख हुआ पर वह इस बात से संतुष्ट भी थी कि उसके बेटे को शीलादित्य की तरह निकम्मा बनकर जीना नहीं पड़ेगा, भूखे नहीं रहना पड़ेगा -

गतिके मोर लॅराटि (प्रणामिकार मते) ढुकोवा भालेइ हैछे, कारण मइ येनेकै रङ, नदी बा पानीर ढौ, मॅहर जाक, स्कुटारर मिछिल बा मारुतिर मिछिल देखि स्तब्ध है चाइ चाइ भोक पलुवाओ सि बेचेरा मोर दरे सिमान साहसी नहॅबओ पारे।

(भट्टाचार्य 2011:23)

{भावार्थ: इसलिए मेरे लड़के (प्रणामिका के अनुसार) का मरना अच्छा ही हुआ, क्योंकि मैं जिस तरह रंग, नदी या पानी की लहरों, भेंसों के झुंड, स्कूटर की भीड़ या मारुति की भीड़ स्तब्ध होकर देखते हुए भूख मिटाता हूँ वह बेचारा मेरी तरह साहसी नहीं भी हो सकता है।}

नायक की उदासीनता :

शीलादित्य इतना ज्यादा निस्संग और इस हद तक बेपरवाह हो गया है कि उसे किसी बात से न दु:ख होता है न सुख। वह विद्रोह भी नहीं करता। मन में विद्रोह या विरोध की बात चलती भी है तो भी वह उसे कार्य-रूप में परिणत नहीं करता है। इस तरह पत्नी के धोखा देकर चले जाने पर उसके पूर्व सहकर्मी उसको दिलासा देने आते हैं। वह उनके साथ हँसी-मजाक करता है, नाश्ता-पानी खिलाता है और उनको विदा करता है। उसे पत्नी के जाने का कोई दु:ख नहीं है। वह इसे पत्नी की स्वतंत्रता का विषय मानता है।

जब एक दिन उसका एक मित्र उसे मिलता है, मित्र उसे कहता है कि वह होता तो हेमंत को छुरी भोंककर मार डालता। तब शीलादित्य जो कहता है, वह उसके जीवन-संघर्ष से हमेशा जूझते रहने की मनोवृत्ति का परिचायक बनता है-

मइ ताक स्पष्ट भाषात ब्यंग करि जनाइ दिलो ये यार जीवन लै युँजार साहस नाइ तेओँलोकेहे आनक छुरी मारि हत्या करिबलै याय।

(भट्टाचार्य 2011:34)

(भावार्थ: मैंने उसे स्पष्ट तौर पर व्यंग करके बता दिया कि जिनमें जीवन को लेकर जूझने का साहस नहीं है वे लोग ही दूसरों को छुरी भोंककर हत्या करना चाहते हैं।)

बहुत सालों बाद एक दिन प्रणामिका एक छोटे लड़के के साथ बाजार में दीखती है। लड़के को प्रणामिका के साथ देकर शीलादित्य को न जाने क्यों ममता आ जाती है वह लड़के को दो संतरे देता है। बच्चा उससे पूछता है कि वह क्यों उसे संतरे दे रहा है। माँ कहती है कि वह बच्चों को उठाकर ले जाने वाला बदमाश

आदमी है। प्रणामिका बच्चे के हाथ से संतरे फेंक देती है और बच्चे को घसीटते हुए ले जाती है। इस दृश्य को देखकर न तो शीलादित्य को बुरा लगता है न उसे दु:ख ही होता है। वह कहता है-

> मइ अलपो हताश नहॅलो, बास्तव एनेकुवाइ बाबे एनेदरेइ घटिछे। इयात एको आचरित हॅबलगीया नाइ।
>
> (भट्टाचार्य 2011:35)

(भावार्थ: मैं थोड़ा भी हताश नहीं हुआ, वास्तव ऐसा ही है इसलिए इस तरह घटित हुआ। इसमें अचरज में पड़ने की कोई बात नहीं है।)

घरेलू हिंसा :

यह उपन्यास स्त्री पर होने वाली घरेलू हिंसा पर भी सवाल उठाता है। शीलादित्य की माँ इसलिए घर छोड़कर एक गूँगे ड्रावर के साथ पंजाब भाग गई क्योंकि पति उसे मारता-पीटता था, दाओ लेकर काटने को उद्यत होता था, खाने की थाली पत्नी की देह पर दे मारता था। उसने जीवन में कोई सुख नहीं पाया और अंत में उसे यह रास्ता अपनाना पड़ा। पिता के अत्याचार से तंग आकर अपनी माँ के घर छोड़कर चले जाने के संबंध में जो बातें शीलादित्य कहता है उनसे भी उसके पिता के माँ के साथ किये दुर्व्यवहार और माँ के घर छोड़कर जाने की विवशता स्पष्ट होती है। शीलादित्य कहता है-

> देउतार अत्याचार आरु उत्पीड़नत थाकिब नोवारि मोर अज्ञाते एदिन निशा कोनोबा एजन अचिन मानुहर लगत गुचि गैछे। एतिया जीयाइ आछे ने नाइ कोनोवे नाजाने। मुखर छबिखनो पाहरि गॅलो। ओचर-चुबुरीयाइ कय, अभावर ताड़नात आरु देउतार अशोभनीय अश्लील गालि-गालाजे शेषत माक तेनेकुवा हॅबलै बाध्य करिले।
>
> (भट्टाचार्य 2011:36)

(भावार्थ: पिता के अत्याचार और उत्पीड़न से विवश होकर मेरे अज्ञात में ही एक रात किसी एक अनजान व्यक्ति के साथ चली गई। अब जीवित है या नहीं कोई नहीं जानता। चेहरा भी भूल गया हूँ। अड़ोसी-पड़ोसी कहते हैं- अभाव के दबाव में और पिता के अश्लील गालियों ने अंत में माँ को वैसा करने के लिए मजबूर किया ।)

व्यापारी वर्ग की मुनाफाखोरी :

आलोच्च उपन्यास में व्यापारी-वर्ग के लालच का भी वर्णन है। व्यापारी-वर्ग अपने

मुनाफे के अलावा कुछ नहीं देखता। अंग्रेज व्यापारियों की इस मनोवृत्ति को भारतीय व्यापारी-वर्ग ने भी विरासत के तौर पर ग्रहण किया। अंग्रेजों ने जिस प्रकार पराधीन भारत के गरीबों का खाना-पीना, पहनना-ओढ़ना मुश्किल कर दिया था, उसी प्रकार अब भारतीय व्यापारी स्वतंत्र भारत के गरीबों की वही दशा कर रहे हैं। शीलादित्य कैफ़े में बैठा रहता है। कैफ़े में बहुत से अपरिचित चेहरे दीखते हैं। परिचित चेहरे गायब हैं। साथ ही उसने कॉलेज स्ट्रीट पर आंदोलन करती भीड़ भी देखी थी। कैफ़े में बैठे रहते वक्त ही उसको एक पर्चा मिलता है जिसमें कागज के दाम की अस्वाभाविक वृद्धि की प्रतिक्रिया में दिन भर के लिए पुस्तक प्रकाशन प्रतिष्ठानों के बंद रखने की सूचना होती है। उस पर्चे में ही लिखा होता है -

> छपाइ हओक बा लेखार कागज यियेइ नहओक बिभिन्न प्रदेशर कागजर मिल मालिकर निज इच्छात दाम बढ़ाइ थका हैछे।
>
> (भट्टाचार्य 2011:38)

(भावार्थ: छापने वाला हो या लिखने वाला कागज हो विभिन्न प्रदेशों के कागज मिल मालिकों की इच्छा-अनुसार ही दाम बढ़ाए जा रहे हैं।)

मूल्य-वृद्धि की समस्या :

मूल्य-वृद्धि की समस्या दशकों पुरानी है। हमारे बाप-दादा के जमाने से ही मूल्य-वृद्धि की समस्या आम लोगों को परेशान करती आ रही है। आज भी जिस तरह चीजों के दाम बढ़ रहे हैं लगता है गरीब लोगों को बहुत सी चीजें, जो वे अब तक इस्तेमाल करते आ रहे थे, उनका इस्तेमाल करना बंद करना पड़ेगा। भूपेंद्रनारायण भट्टाचार्य जी ने इस उपन्यास में 80 के दशक की मूल्य-वृद्धि की समस्या पर खेद प्रकट किया है। वे सर्कस के पोस्टर में जोकरों और बौनों को हँसते हुए देख कर सोचते हैं कि ये लोग हमेशा कैसे हँसते रह सकते हैं। इसी अवसर पर वे मूल्य-वृद्धि की समस्या को इस बात से जोड़कर पेश करते हैं -

> बोधहय, सिहँत एइ देशर मानुहेइ नहय। नहॅलेनो एके बजारर परा एके दरर बस्तु किनि खाइ हाँहे केनेकै?
>
> (भट्टाचार्य 2011:40)

(भावार्थ: लगता है, वे लोग इस देश के वासी हैं ही नहीं। वरना एक ही बाजार से एक ही कीमत पर चीजें खरीदते हुए खाकर हँसते कैसे हैं?)

घूसखोरी की समस्या :

घूसखोरी की समस्या को भी यह उपन्यास प्रतिफलित करता है। नौकरी देने के लिए घूस लेने के कारण ही सरकारी नौकरी पाने योग्य प्रार्थी के लिए भी नौकरी पाना दुष्कर हो गया है। योग्यता नहीं देखते, पैसा चाहिए। बहुत-से युवा घूस के रुपये जुटाने के लिए जमीन-जायदाद बेच देते हैं इस उम्मीद में कि नौकरी करके घूस के रुपये से ही फिर से जमीन-जायदाद खरीद लेंगे। सरकारी नौकरी में यह गारंटी है कि सरकार तो किसी भी दल की हो, रहेगी ही। जब सरकार हमेशा के लिए है तो आर्थिक सिक्यूरिटी हमेशा रहेगी। इसी उम्मीद में युवा घूस के रुपये जुटाने के लिए क्या कुछ नहीं करते। शीलादित्य को रास्ते में एक नेता का वोट माँगते हुए एक पोस्टर दीखता है। वह जब उसे पहचान जाता है तो गुस्से के मारे कान गरम हो जाते हैं। वह कहता है -

> एइ पॅष्टारत हातयोर करि थका मानुहजनेइतो एदिनाखन एटा केराणी चाकरिर बाबे दह हेजार टका मोर परा खुजिछिल।
>
> (भट्टाचार्य 2011:44)

(भावार्थ: इस पोस्टर में हाथ जोड़कर रहने वाले व्यक्ति ने ही तो एक दिन एक क्लर्क की नौकरी के लिए दस हजार रुपये मुझसे माँगे थे।)

शीलादित्य पोस्टर के उस व्यक्ति के गाल पर जोर से लात मार देता है और पोस्टर को देखता है। यह घूसखोर के साथ किसी भुक्तभोगी व्यक्ति द्वारा किया जा सकने वाला सम्भावित आचरण है।

क्या देश-सेवा के लिए राजनीति जरूरी है?

ऊपर उल्लिखित पोस्टर पर लिखा है-

> आपोनार देशखन सर्बाङ्गसुंदर करि तुलिबलै मोक भोट दियक।
>
> (भट्टाचार्य 2011:44)

(भावार्थ: आपके देश को सर्वांगसुंदर बनाने के लिए मुझे वोट दीजिए।)

शीलादित्य कहता है -

> भोट नोखोजाकै बा मंत्री नोहोवाकै कि देश सर्बाङ्गसुंदर करिब नोवारि?
>
> (भट्टाचार्य 2011:45)

(भावार्थ: वोट न माँगकर या मंत्री न बनकर क्या देश को सर्वांगसुंदर नहीं बनाया जा सकता?)

इस सवाल पर विचार करना बहुत आवश्यक है। क्या सच में पद न प्राप्त करके, सत्ता न प्राप्त करके केवल एक आम नागरिक की तरह हम देश के लिए कुछ नहीं कर सकते? क्या राजनीति में जाने वाला व्यक्ति सत्ता प्राप्त करने के बाद देश को सर्वांगसुंदर बनाने के अपने वादे को निभाता है? क्या देश की कद्र करने वाले सभी व्यक्तियों को राजनीति में आने की आवश्यकता है? मन में सच्ची चाह हो तो कोई भी व्यक्ति देश के विकास में अपना योगदान दे सकता है।

जीने की प्रेरणा देता उपन्यास :

प्रस्तुत उपन्यास जीवन जीने की प्रेरणा देता है, बुरी से बुरी परिस्थिति में भी आत्महत्या का पथ न चुनने का बहुत ही प्रभावशाली परामर्श देता है। लोग जिंदगी की मुश्किलों से तंग आकर आत्महत्या का पथ चुन लेते हैं। इससे उस व्यक्ति की जान चली जाती है। इससे उसका क्या फायदा होता है? जीवन से प्यारी और जरूरी कुछ भी नहीं है दुनिया में। देश के लिए जान कुर्बान करना बड़े गर्व की बात है। पर आत्महत्या करके बिना किसी बृहत्तर उद्देश्य को सामने रखे प्राण त्याग देना किसी भी दृष्टि से औचित्यपूर्ण नहीं है। शीलादित्य कहता है -

> आचलते आत्महत्यार कोनो अर्थ नाइ। यिहेतु स्वाभाविक मृत्यु सकलोरे कारणेइ, तातकै जीयाइ थाकि किनो हय चाइ योवा भाल।
>
> (भट्टाचार्य 2011:49)

(भावार्थ: वास्तव में आत्महत्या का कोई अर्थ नहीं है । चूँकि स्वाभाविक मृत्यु सभी के लिए है, इसीलिए जिंदा रहकर क्या होता है देख लेना ही अच्छा है।)

उपन्यास का अंत :

आलोच्य उपन्यास का अंत आशा के साथ हुआ है। शीलादित्य के मन में आशा का संचार होता है। इसे उपन्यासकार ने बड़े ही कलात्मक ढंग से प्रस्तुत किया है। शीलादित्य को अपने घर के सामने के अनार पेड़ के अनार, जब से उसका रिश्ता टूटता है, काले दीखते थे। पर उपन्यास के अंत में उसे वे अनार लाल दीखते हैं । यह उसके मन में जीवन के लिए सकारात्मक दृष्टिकोण और उसके मन की आशा का प्रतिफलन है -

> पकि पकि फाटि परा रसाल सेंदूरीया डालिमबोर मइ इमानदिने कॅला कॅला देखिछिलो। आजि किंतु सेइबोर टिकटिकिया रङा है थका येन अनुभव हॅल।
>
> (भट्टाचार्य 2011:51)

(भावार्थ: पक-पक कर फट पड़े रसीले सिंदूरी अनारों को मैंने इतने दिन काले रंग में देखा था। पर आज वे सब गाढ़े लाल रंगवाले अनुभूत हुए।)

यह उपन्यास कुछेक ज्वलंत प्रश्न छोड़ जाता है कि क्या पुरुष कमाऊ न हो तो उसके साथ कोई स्त्री नहीं रह सकती? क्या महिला आर्थिक रूप से हमेशा पुरुष पर आश्रित रहेगी? पुरुष कमाता हो तभी महिला उसको प्रेम और इज्जत देगी।

निष्कर्ष:

निष्कर्ष रूप में कहा जा सकता है कि चेतना प्रवाह शैली में लिखा गया 'मरूद्यान' एक प्रमुख और उत्कृष्ट कोटि का असमीया उपन्यास है। आकार में छोटा होने पर भी यह बहुत ही प्रभावशाली है। यह उपन्यास एक बेरोजगार युवक की सांसारिक व्यर्थता की कहानी कहता है। साथ ही कलाकार-सुलभ बेपरवाही भी नायक में परिलक्षित होती है। नायक आधुनिक विचारधारा से प्रेरित युवक है जो अपने साथी के समान अधिकार को मानता है चाहे उस अधिकार का उपभोग करते हुए उसका साथी उसके साथ घोर अन्याय ही क्यों न कर दे। उपन्यास का नायक हर परिस्थिति में सकारात्मक सोच रखता है और यही सोच उसे आशावादी बनाता है। इस उपन्यास में सामाजिक समस्याओं, रिश्वतखोरी, भ्रष्टाचार आदि को भी चित्रित करने का प्रयास लक्षित होता है। इस उपन्यास का घटना-क्रम और कार्य-व्यापार बड़े ही रोचक हैं। पाठक को अपने साथ बाँधे रखने में यह उपन्यास पूर्णत: समर्थ है।

यह उपन्यास जीवन की मरुभूमि के बीच आशा और सकारात्मक दृष्टिकोण का मरूद्यान है।

ग्रंथ-सूची :

भट्टाचार्य, भूपेंद्रनारायण. मरूद्यान आरु अन्यान्य. गुवाहाटी: एन.एल. पाब्लिकेशन्स, 2011.

संपर्क-सूत्र:
शोधार्थी, हिंदी विभाग
गौहाटी विश्वविद्यालय
ई-मेइल: 666mandal@gmail.com